॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ५ अगस्त २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ | अंक - ५, अगस्त | २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. हरिवंश की उत्पत्ति	आचार्य हस्तिमलजी महाराज	३०१
२. वैर का विपाक		३१७
३. क्या जैन समाज की चेतना कभी जागृत होगी?	सायरा उगमजी ललवानी, बेंगलोर	३२७

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

हरिवंश की उत्पत्ति

आचार्य हस्तिमलजी महाराज

दसवें तीर्थंकर भगवान् शीतलनाथ के तीर्थ में वत्स देश की कौशम्बी नगरी में सुमुह नाम का राजा था। उसने वीरक नामक एक व्यक्ति की वनमाला नाम की परम सुन्दरी स्त्री को प्रच्छन्न रूप से अपने पास रख लिया। पत्नी के विरह में विलाप करता हुआ वीरक अर्द्धविक्षिप्त सा रहने लगा और कालान्तर में वह बाल तपस्वी हो गया। उधर वनमाला कौशाम्बीपति सुमुह की परमप्रिया होकर विविध मानवी भोगों का उपभोग करती हुई रहने लगी।

इस प्रकार सुख से जीवन बिताते हुए एक दिन राजा सुमुह अपनी प्रिया वनमाला के साथ वनविहार करने गया और वहां वीरक को बड़ी दयनीय दशा में देखकर अपने कुकृत्य के लिए पाश्चात्ताप करने लगा—ओह! मैंने कितंना बड़ा दुष्कृत्य किया है, मेरे ही अन्याय और दोष के कारण यह वीरक इस अवस्था को प्राप्त होकर तपस्वी बना है।

वनमाला भी इसी प्रकार पश्चात्ताप करने लगी। इस तरह पश्चात्ताप करते हुए दोनों ने भद्र एवं सरल परिणामों के कारण मनुष्य आयु का बन्ध किया। सहसा बिजली गिरने से दोनों का वहीं प्राणान्त हो गया और वे हरिवास नामकी भोगभूमि में युगल रूप में उत्पन्न हुए।

कालान्तर में वीरक भी मरकर सौधर्म कल्प में किल्विषी देव हुआ और उसने अवधिज्ञान से देखा कि उसका शत्रु हरि अपनी प्रिया हरिणी के साथ भोगभूमि में अनपवर्त्य आयु से उत्पन्न होकर भोगोपभोग का सुख भोग रहा है।

वह कुपित होकर सोचने लगा—क्या इस दुष्ट को निष्ठुरतापूर्वक कुचल कर चूर्ण कर दूं? मेरा अपकार करके भी ये भोगभूमि में उत्पन्न हुए हैं अतः इन्हें यों तो नहीं मार सकता। पर इन्हें ऐसे स्थान पर पहुँचाया जाय जहां तीव्र बन्ध योग्य भोग-भोगकर ये दुःख परम्परा में फंस जायं।

उसने ज्ञान से देखा व सोचा—चम्पा का नरेश अभी-अभी कालधर्म को प्राप्त हुआ है अतः इन्हें वहां पहुंचा दूं क्योंकि एक दिन का भी आसक्तिपूर्वक किया गया राज्य-भोग, दुर्गति का कारण होता है, तो फिर अधिक दिन की तो बात ही क्या है?

ऐसा विचारकर देव ने करोड़ पूर्व की आयु वाले हरि-युगल को चित्तरस कल्पवृक्ष सहित उठाकर चम्पा नगरी के उद्यान में पहुंचा दिया और नागरिक जनों को आकाशवाणी से कहने लगा— तुम लोग राजा की खोज में चिन्तित क्यों हो, मैं तुम्हारे लिए करुणा कर यह राजा लाया हूँ। तुम लोग इनका उचित आहार-विहार से पोषण करो, मांस-रस-भावित फल से इनका प्रेम सम्पादन करते रहना।

ऐसा कहकर देव ने हरि-युगल की करोड़ पूर्व की आयु का एक लाख वर्ष में अपवर्तन किया[२] और अवगाहना (शरीर की ऊंचाई) भी घटाकर १००·धनुष की कर दी। देव के कथानुसार नागरिकों ने हरि का राज्याभिषेक किया और बड़े सम्मान से उसका पोषण करते रहे। तमोगुणी आहार और भोगासक्ति के कारण हरि और हरिणी दोनों मरकर नरक गति के अधिकारी बने। यह एक आश्चर्यजनक घटना हुई क्योंकि युगलिकों का नरक गमन नहीं होता।

इसी हरि और हरिणी के युगल से हरिवंश की उत्पत्ति हुई। हरिवंश की उत्पत्ति का समय तीर्थंकर शीतलनाथ के निर्वाण पश्चात् और भगवान् श्रेयांसनाथ के पूर्व माना गया है।[३]

हरिवंश में अनेक शक्तिशाली, प्रतापी और धर्मात्मा राजा हुए, जिनमें से अनेकों ने कई नगर बसाये। कुछ नगर आज तक भी उन प्रतापी नराधिपतियों के नाम पर विख्यात हैं।

हरिवंश की परम्परा

हरिवंश के आदिपुरुष हरि के पश्चात् इस वंश में जो पैत्रिक अधिकार के आधार पर उत्तराधिकारी राजा हुए उनके कुछ नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:-

१) पृथ्वीपति (हरि का पुत्र)
२) महागिरि
३) हिमगिरि
४) वसुगिरि
५) नरगिरि
६) इन्द्रगिरि

इस तरह इस हरिवंश में असंख्य राजा हुए। बीसवें तीर्थंकर भगवान् मुनिसुव्रत भी इसी प्रशस्त हरिवंश में हुए।

माधव इन्द्रगिरि का पुत्र दक्ष प्रजापति हुआ। इस दक्ष प्रजापति की रानी का नाम इला और पुत्र का नाम इल था। किसी कारणवश महारानी इला अपने पति दक्ष से रूठकर अपने पुत्र इल को साथ ले दक्ष के राज्य से बाहर चली गई और उसने ताम्रलिप्ति प्रदेश में इलावर्द्धन नामक नगर बसाया और इल ने माहेश्वरी नगरी बसाई।

राजा इल के पश्चात् उनका पुत्र पुलिन राज्य-सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। पुलिन ने एकदा वन में एक स्थान पर देखा कि एक हरिणी कुंडी बनाकर कुण्डलाकर मुद्रा में एक सिंह का सामना कर रही है। इसे उस क्षेत्र का प्रभाव समझकर पुलिन ने उस स्थान पर 'कुंडिणी' नगरी बसाई।

पुलिन के पश्चात् 'वरिम' नामक राजा हुआ, जिसने इन्द्रपुर नगर बसाया। इसी वंश के राजा 'संजती' ने वणवासी अथवा वाणवासी नाम की एक नगरी बसाई। इसी राजवंश में कोल्लयर नगर का अधिपति 'कुणिम' नाम का एक प्रसिद्ध राजा हुआ। फिर इसका पुत्र महेन्द्र दत्त राजा हुआ। महेन्द्र दत्त के अरिष्टनेमि और मत्स्य नामक दो पुत्र बड़े प्रतापी राजा हुए। अरिष्टनेमि ने गजपुर नामक नगर बसाया और मत्स्य ने भद्दिलपुर नगर। अरिष्टनेमि और मत्स्य के, प्रत्येक के सौ-सौ पुत्र हुए।

इसी हरिवंश के 'अयधणू' नामक एक राजा ने सोज्झ नामक नगर बसाया। इसके अनन्तर मूल नामक राजा हुआ। राजा मूल के पश्चात् विशाल नामक नृप हुआ जिसने मिथिला नगरी को बसाया।

राजा विशाल के पश्चात् क्रमशः हरिषेण, संख, भद्र और अभिचन्द्र नाम के बहुत से राजा हुए। अभिचन्द्र का पुत्र वसु एक बड़ा प्रसिद्ध राजा हुआ जो आगे चलकर उपरिचर वसु (आकाश में अधर सिंहासन पर बैठने वाला) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उपरिचर वसु

यह वसु हरिवंश का एक महान् प्रतापी राजा था। उसने बाल्यावस्था में क्षीरकदम्बक नामक उपाध्याय के पास अध्ययन किया। महर्षि नारद एवं आचार्यपुत्र पर्वत भी वसु के सहपाठी थे। ये तीनों शिष्य जिस समय उपाध्याय क्षीरकदम्बक के पास अध्ययन कर रहे थे, उस समय किसी एक अतिशय-ज्ञानी ने अपने साथी साधु से कहा कि इन तीनों विद्यार्थियों में से एक तो राजा बनेगा, दूसरा स्वर्ग का अधिकारी होगा और तीसरा नरक में जायेगा।

क्षीरकदम्बक ने किसी तरह यह बात सुनली और मन में विचार किया कि वसु तो राजा बनेगा पर नारद और पर्वत, इन दोनों में से नरक में कौन जायेगा, इसका निर्णय करना आवश्यक है। अपने पुत्र पर्वत और नारद की परीक्षा करने के लिये उपाध्याय ने एक कृत्रिम बकरा बनाया और उसमें लाक्षारस भर दिया। उपाध्याय द्वारा निर्मित वह बकरा वस्तुतः सजीव बकरे के समान प्रतीत होता था।

उपाध्याय ने नारद को बुलाकर कहा—वत्स! मैंने इस बकरे को मन्त्र-बल से स्तंभित कर दिया है। आज बहुला अष्टमी है अतः संध्या के समय, जहां कोई नहीं देखता हो, ऐसे स्थान पर इसे मारकर शीघ्र लौट आना।

अपने गुरु के आदेशानुसार नारद संध्या के समय उस बकरे को लेकर निर्जन स्थान में गया और विचार किया कि यहाँ तो तारे और नक्षत्र देख रहे हैं। वह और भी घने जंगल के अन्दर चला गया और वहां पर भी उसने सोचा कि यहां पर भी वनस्पतियां देख रही हैं जो कि सचेतन हैं। उस घने जंगल के उन निर्जन स्थान से भी नारद बकरे को लिये हुए आगे बढ़ा और

एक देवस्थान में पहुंचा। पर वहाँ पर भी उसने मन में विचार किया कि वहां पर भी देव देख रहे हैं।

नारद असमंजस में पड़ गया। उसके मन में विचार आया—गुरु आज्ञा यह है कि जहां कोई नहीं देखता हो, उस स्थान पर इसका वध करना। पर ऐसा तो कहीं कोई भी स्थान नहीं है, जहां कि कोई न कोई नहीं देखता हो, ऐसी दशा में यह बकरा निश्चित रूप से अवध्य है।

अन्ततोगत्वा नारद उस बकरे को बिना मारे ही गुरु के पास लौट आया और उसने गुरु के समक्ष अपने सारे विचार प्रस्तुत किये।

गुरु ने साधुवाद के साथ कहा—नारद! तुमने बिलकुल ठीक तरह से सोचा है। तुम जाओ, इस सम्बन्ध में किसी से कुछ न कहना।

नारद के चले जाने के अनन्तर उपाध्याय ने अपने पुत्र पर्वत को बुलाया और उसे भी वही कृत्रिम बकरा सम्हलाते हुए उसी प्रकार का आदेश दिया, जैसा कि नारद को दिया था।

बकरे को लेकर पर्वत एक जन-शून्य गली में पहुँचा। उसने वहां खड़े होकर चारों ओर देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा है। जब वह आश्वस्त हो गया कि उसे उस स्थान पर कोई मनुष्य नहीं देख रहा है, तो उसने तत्काल उस बकरे को काट डाला। कृत्रिम बकरे की गर्दन कटते ही उसमें भरे लाक्षारस से पर्वत के वस्त्र लाल हो गये। पर्वत ने लाक्षारस को लहू समझकर वस्त्रों सहित ही स्नान किया और घर पहुँच कर यथावत् सारा विवरण अपने पिता के समक्ष कह सुनाया।

उपाध्याय क्षीरकदम्बक को अपने पुत्र की बात सुनकर अपार दुःख हुआ। उन्होंने कुद्ध-स्वर में कहा ओ पापी! तूने यह क्या कर डाला? क्या तू यह नहीं जानता कि सम्पूर्ण ज्योतिमण्डल के देव, वनस्पतियां और अदृश्य रूप से विचरण करने वाले गुह्यक सब के कार्यों को प्रतिक्षण देखते रहते हैं? इन सबके अतिरिक्त तू स्वयं भी तो देख रहा था। इस पर भी तूने बकरे को मार डाला। तू निश्चित रूप से नरक में जायगा। हट जा मेरे दृष्टिपथ से।

कालान्तर में नारद अपना अध्ययन समाप्त होने पर गुरु की पूजा कर अपने निवास-स्थान को लौट गया।

वसु ने गुरुकुल से विदाई लेते समय जब अपने गुरु से गुरुदक्षिणा के लिये आग्रह किया तो उपाध्याय क्षीरकदम्बक ने कहा—वत्स! राजा बन जाने पर तुम अपने समवयस्क पर्वत के प्रति स्नेह रखना। बस, यही मेरी गुरुदक्षिणा है। मैं तुम्हारा महन्त हूँ।

कुछ समय पश्चात् वसु चेदि देश का राजा बना। एक बार मृगया के लिये जंगल में घूमते हुए वसु ने एक मृग को निशाना बनाकर तीर चलाया, पर मृग एवं तीर के बीच में आकाश के समान स्वच्छ स्फटिक पत्थर था अतः बाण राह में ही उससे टकरा कर गिर गया। पास में जाकर वसु ने जब स्फटिक पत्थर को देखा तो उसके मन में विचार आया कि यह स्फटिक पत्थर एक राजा के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण वस्तु है और अपने नगर में लौटने पर प्रधानामात्य को स्फटिक पत्थर के सम्बन्ध में अवगत किया।

प्रधानामात्य ने वह स्फटिक पत्थर राजप्रासाद में मंगवा लिया और उस पर वसु का राजसिंहासन रख दिया। कहीं इस रहस्य का भण्डाफोड़ नहीं हो जाय, इस आशंका से स्फटिक पत्थर लाने वाले सब लोगों को उनकी स्त्रियों सहित प्रधानामात्य ने मरवा डाला।

स्फटिकशिला पर रखे राजसिंहासन पर बैठने के कारण वसु की ख्याति विश्व में फैल गई कि न्याय एवं धर्मपरायण होने के कारण वसु का राजसिंहासन आकाश में अधर रहता है और इस प्रकार वह उपरिचर वसु के नाम से लोक में प्रख्यात हो गया।

आचार् क्षीरकदम्बक की मृत्यु के पश्चात् पर्वत उपाध्याय बना और अध्यापन का कार्य करने लगा। पर्वत अपने शिष्यों को अजैर्यष्टव्यं इस वेदवाक्य का यह अर्थ बताने लगा कि बकरों से यज्ञ करना चाहिए।

नारद को जब इस अनर्थ की सूचना मिली तो वह पर्वत के पास पहुँचा पर्वत ने इस गर्व से कि वह राजा के द्वारा पूजनीय है, जन-समुदाय के समक्ष कहा--अजा अर्थात् बकरों से यज्ञ करना चाहिए।[४]

नारद ने पर्वत को अच्छी तरह समझाया कि वह परम्परागत पवित्र वेद-वाक्य के अर्थ का अनर्थकारी प्रलाप न करें। अज का अर्थ ऋषि-महर्षि और श्रुतियां सदा से त्रैवार्षिक यव-व्रीही बताती आ रही, हैं न कि छाग।

नारद द्वारा बार-बार समझाने-बुझाने पर भी पर्वत ने अपना दुराग्रह नहीं छोड़ा। ज्यों-ज्यों विवाद बढ़ता गया, त्यों त्यों पर्वत का दुराग्रह भी बढ़ता गया। अन्त में क्रुद्ध हो पर्वत ने अपने असत्य-पक्ष पर अड़े रहकर एकत्रित विद्वानों के समक्ष यह कह दिया—नारद! मेरा पक्ष सत्य है। यदि मेरी बात मिथ्या साबित हो जाय तो विद्वानों के समक्ष मेरी जिह्वा काट डाली जाय अन्यथा तुम्हारी जिह्वा काट ली जाय।[५]

नारद ने कहा—पर्वत! दुराग्रह का अवलम्बन लेकर इस प्रकार की प्रतिज्ञा न करो। मैं तो तुमसे बार-बार यही कहता हूँ कि इस प्रकार का अनर्थ और अधर्म मत करो। हमारे पूज्यपाद उपाध्याय ने हमें अज का अर्थ नहीं उगने वाला धान्य बताया है। यह तुम भी अपने मन में भलीभांति जानते हो। केवल दुराग्रहवश तुम जो यह अधर्मपूर्ण अनर्थ करने जा रहे हो, यह तुम्हारे लिये भी अकल्याणकर है और लोकों के लिये भी।

इस पर पर्वत ने कहा–इस वेदवाक्य का अर्थ मैं भी अपनी बुद्धि से नहीं बता रहा हूँ। आखिर मैं भी उपाध्याय का पुत्र हूँ। पिताजी ने मुझे इसी प्रकार का अर्थ सिखाया है।

नारद ने कहा—पर्वत! हमारे स्वर्गीय गुरु के हम दोनों के अतिरिक्त तीसरे शिष्य हरिवंशोत्पन्न महाराज उपरिचर वसु भी हैं। अतः अजैर्यष्टव्यं का अर्थ उनसे पूछा जाय और वे जो इसका अर्थ बताएं, उसे प्रामाणिक और सत्य माना जाय।

पर्वत की माता को अपने पुत्र की बात पर विश्वास नहीं हुआ। वह महाराज वसु के पास गई और वसु के समक्ष अजैर्यष्टव्यं इस वेदवाक्य को लेकर नारद और पर्वत के बीच जो विवाद खड़ा हुआ, उसके सम्बन्ध में दोनों के पक्ष को प्रस्तुत करने के पश्चात् वसु से उसने पूछा–तुम्हारे आचार्य से तुम लोगों ने अजैर्यष्टव्यम् इस वेदवाक्य का क्या अर्थ सीखा था।

उत्तर में वसु ने कहा– मात! इस पद का अर्थ जैसा कि नारद बताता है, वही हम लोगों ने हमारे पूज्यपाद आचार्य से अवधारित किया है।

वसु का उत्तर सुनकर पर्वत की माता शोकसागर में निमग्न हो गई। उसने वसु से कहा–वत्स! यदि तुमने इस प्रकार का निर्णय दिया तो मेरे पुत्र पर्वत का सर्वनाश सुनिश्चित है। पुत्र-वियोग में मैं भी अपने प्राणों को धारण नहीं कर सकूँगी। अतः अपने पुत्र की मृत्यु से पहले ही मैं तुम्हारे सम्मुख अभी इसी समय अपने प्राणों का परित्याग किये देती हूँ।

यह कहकर पर्वत की माता ने तत्काल अपनी जिह्वा अपने हाथ से पकड़ ली।

मरणोद्यता उपाध्यायिनी को देखकर वसु नृपति अवाक् रह गये। उसी समय पाखण्ड-पन्थ के उपासक कुछ लोगों ने राजा वसु से कहा–देव! उपाध्यायिनी के वचनों को सत्य समझिये। यदि कहीं ऐसा अनर्थ हो गया तो हम इस पाप से तत्क्षण ही नष्ट हो जायेंगे।

अपनी उपाध्यायिनी द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के निवारणार्थ और पर्वत के समर्थन पाखण्डपन्थानुयायी लोगों के कहने में आकर अवश हो वसु ने कहा–मां! ऐसा न करो। मैं पर्वत के पक्ष का समर्थन करूँगा।

अपना कार्य सिद्ध हुआ देख आचार्य क्षीरकदम्बक की विधवा पत्नी अपने घर को लौट गई।

दूसरे दिन जन-समुदाय दो दलों में विभक्त हो गया। कई नारद की प्रशंसा करने लगे तो कई पर्वत की। विशाल जनसमूह के साथ नारद और पर्वत

महाराज उपरिचर वसु की राजसभा में पहुंचे। उपरिचर वसु अदृश्य तुल्य स्फटिक-प्रस्तर-निर्मित विशाल स्तम्भ पर रखे अपने राजसिंहासन पर विराजमान थे अतः यही प्रतीत हो रहा था कि वे बिना किसी प्रकार के सहारे के आकाश में अधर सिंहासन पर विराजमान हैं।

नारद और पर्वत ने क्रमशः अपना-अपना पक्ष महाराज उपरिचर वसु के समक्ष रखा और उन्हें निर्णय देने का अनुरोध किया कि दोनों पक्षों में से किसका पक्ष सत्य है?

सत्य-पक्ष को जानते हुए भी अपनी आचार्य-पत्नी, पर्वत की माता को दिये गये आश्वासन के कारण असत्य-पक्ष का समर्थक करते हुए महाराज वसु ने निर्णन दिया—अज अर्थात् छाग-बकरे से यज्ञ करना चाहिए।

असत्य-पक्ष को जान-बुझकर समर्थन करने के कारण उपरिचर वसु का सिंहासन उसी समय सत्य के समर्थन देवताओं द्वारा ठुकराया जाकर पृथ्वी पर ग़िरा दिया गया और इसी तरह उपरिचर वसु स्थलचल वसु बन गया।

तत्काल वसु के समक्ष प्रामाणित धर्म-ग्रन्थ रखे गये और उससे कहा गया कि उन्हें देखकर पुनः वह सही निर्णय दे। पर फिर भी वसु ने मूढ़तावश यही कहा—जैसा पर्वत कहता है, वही इसका सही अर्थ है।

अदृष्ट शक्तियों द्वारा वसु तत्काल घोर रसातल में ढकेल दिया गया। उपस्थित जनसमुदाय पर्वत को धिक्कारने लगा कि इसने वसु का सर्वनाश करवा डाला। अधर्मपूर्ण असत्य-पक्ष का समर्थन करने के कारण राजा वसु नरक के दारुण दुखों का अधिकारी बना।[६]

तत्पश्चात् नारद वहां से चले गये। पर्वत ने तत्कालीन राजा सगर के शत्रु महाकाल नामक देव की सहायता से यज्ञों में पशुबलि का सूत्रपात किया।

महाभारत में वसु का उपाख्यान

महाभारत के शान्तिपर्व में भी वसुदेव हिण्डी से प्रायः काफी अंशों में मिलता-जुलता महाराज वसु का उपाख्यान दिया हुआ है। चेदिराज वसु द्वारा

असत्य-पक्ष का समर्थन करने के कारण वैदिकी श्रुति अजैर्यष्टव्यम् में दिये गये अज शब्द का अर्थ त्रैवार्षिक यवों के स्थान पर छाग अर्थात् बकरे प्रतिपादित किया जाकर यज्ञों में पशुबलि का सूत्रपात हुआ, इस तथ्य को जैन और वैष्णव दोनों परम्पराओं के प्राचीन और सर्वमान्य ग्रन्थ एकमत से स्वीकार करते हैं।

प्राचीनकाल के ऋषि, महर्षि, राजा एवं सम्राट् अज अर्थात् त्रैवार्षिक यव, घृत एवं वन्य औषधियों से यज्ञ करते थे। उस समय के यज्ञों में पशु-हिंसा का कोई स्थान ही नहीं था और यज्ञों में पशुबलि को घोरातिघोर पापपूर्ण, गर्हित एवं निन्दनीय दुष्कृत्य समझा जाता था, यह महाभारत में उल्लिखित तुलाधार-उपाख्यान,[७] विचख्नु-उपाख्यान[८] एवं उपरिचर राजा वसु के उपाख्यानों से स्पष्टरूपेण सिद्ध होता है।

यज्ञ में पशुबलि का वचनमात्र से अनुमोदन करने के कारण उपरिचर वसु को रसातल के अन्धकारपूर्ण गहरे गर्त में गिरना पड़ा, इस सन्दर्भ में महाभारत में उल्लिखित वसु का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :-

राजा वसु को घोर तपश्चर्या में निरत देखकर इन्द्र को शंका हुई कि यदि यह इसी तरह तपश्चर्या करते रहे तो एक न एक दिन उसका इन्द्र-पद उससे छीन लेंगे। इस आशंका से विह्वल हो इन्द्र तपस्वी वसु के पास आया और उसे तप से विरत करने के लिये उसने समृद्ध चेदि का विशाल राज्य देने के साथ-साथ स्फटिक रत्नमय गगनबिहारी विमान एवं सर्वज्ञ होने का वरदान आदि दिये। वसु की राजधानी शुक्तिमती नदी के तट पर थी।[९]

वसु का हिंसा-रहित यज्ञ

इन्द्र द्वारा प्रदत्त आकाशगामी विमान में विचरण करने के कारण ये उपरिचर वसु के नाम से लोक में विख्यात हुए। उपरिचर वसु बड़े सत्यनिष्ठ, अहिंसक और यज्ञशिष्ट अन्न का भोजन करने वाले थे।

अंगिरस पुत्र-बृहस्पति इनके गुरु थे। न्याय, नीति एवं धर्मपूर्वक पृथ्वी का पालन करते हुए राजा वसु ने महान् अश्वमेघ यज्ञ किया। उस अश्वमेघ यज्ञ

के बृहस्पति, होता तथा एकत, द्वित, त्रित, धनुष, रैभ्य, मेधातिथि, शालिहोत्र कपिल, वैशम्पायन, कण्व आदि १६ महर्षि सदस्य हुए। उस महान् यज्ञ में यज्ञ के लिये सम्पूर्ण आवश्यक सामग्री एकत्रित की गई परन्तु उसमें किसी भी पशु का वध नहीं किया गया। राजा उपरिचर वसु पूर्ण अहिंसक भाव से उस यज्ञ में स्थित हुए। वे हिंसाभाव से रहित, कामनाओं से रहित, पवित्र तथा उदारभाव से अश्वमेघ यज्ञ करने में प्रवृत्त हुए। वन में उत्पन्न हुए फल मूलादि पदार्थों से ही उस यज्ञ में देवताओं के भाग निश्चित किये गये थे। भगवान् नारायण ने वसु के इस प्रकार यज्ञ से प्रसन्न हो स्वयं उस यज्ञ में प्रकट हो महाराज वसु को दर्शन दिये और अपने लिये अर्पित पुरोडाश (यज्ञभाग) को ग्रहण किया। यथा :-

सम्भूताः सर्वसम्भारास्तस्मिन् राजन् महाक्रतौ ।
न तत्र पशुघातोऽभूत्, स राजैवं स्थितोऽभवत् ।।१०।।
अहिंसः शुचिरक्षुद्रो, निराशीः कर्मसंस्तुतः ।
आरण्यकपदोद्भूता, भागास्तत्रोपकल्पिताः ।।११।।
प्रीतस्ततोऽस्य भगवान्, देवदेवः पुरातनः ।
साक्षात् तं दर्शयामास, सोऽदृश्योऽन्येन केनचित् ।।१२।।
स्वयं भागमुपाघ्राय, पुरोडाशं गृहीतवान् ।
अदृश्येन हृतो भागो, देवेन हरिमेधसा ।।१३।।

(महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ३३६)

उस महान् अश्वमेघ-यज्ञ को पूर्ण करने के पश्चात् राजा वसु बहुत काल तक प्रजा का पालन करता रहा।

अजैर्यष्टव्यम् को लेकर विवाद

एक बार ऋषियों और देवताओं के बीच यज्ञों में दी जाने वाली आहुति के सम्बन्ध में विवाद उठ खड़ा हुआ। देवगण ऋषियों से कहने लगे-अजेन यष्टव्यम् (अजैर्यष्टव्यम्) अर्थात् अज के द्वारा यज्ञ करना चाहिए। यह, ऐसा

जो विधान है, इसमें आये हुए अज शब्द का अर्थ बकरा समझना चाहिए न कि अन्य कोई पशु। निश्चित रूप से यही वास्तविक स्थिति है।

इस पर ऋषियों ने कहा-देवताओं! यज्ञों में बीजों द्वारा यजन करना चाहिए, ऐसी वैदिकी श्रुति है। बीजों का ही नाम अज है; अतः बकरे का वध करना हमें उचित नहीं है। जहां कहीं भी यज्ञ में पशुओं का वध हो, वह सत् पुरुषों का धर्म नहीं है। यह श्रेष्ठ सत्ययुग चल रहा है। इसमें पशु का वध कैसे किया जा जाता है?

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
ऋषीणां चैव संवादं, त्रिदशानां च भारत ।।२।।
अजेन यष्टव्यमिति ज्ञेयो नान्यः पशुरिति स्थितिः ।।३।।

ऋषयः ऊचुः

बीजैर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति वै वैदिकी श्रुति श्रुतिः ।
अजसंज्ञानि बीजानि, च्छागं नो हन्तुमर्हथ ।।४।।
नैष धर्मः सतां देवा, यत्र वध्येत वै पशुः ।
इदं कृतयुगं श्रेष्ठं, कथं वध्येत वै पशुः ।।५।।

(महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ३३७)

जिस समय देवताओं और ऋषियों के बीच इस प्रकार का संवाद चल रहा था, उसी समय नृपश्रेष्ठ वसु भी आकाशमार्ग से विचरण करते हुए उस स्थान पर पहुंच गये। उन अन्तरिक्षचारी राजा वसु को सहसा आते देख ब्रह्मर्षियों ने देवताओं से कहा—ये नरेश हम लोगों के संदेह दूर कर देंगे। क्योंकि ये यज्ञ करने वाले, दानपति, श्रेष्ठ तथा सम्पूर्ण भूतों के हितैषी एवं प्रिय हैं। ये महान् पुरुष वसु शास्त्र के विपरीत वचन कैसे कह सकते हैं?

इस प्रकार ऋषियों और देवताओं ने एकमत हो एक साथ राजा वसु के पास जाकर अपना प्रश्न उपस्थित किया— राजन्! किसके द्वारा यज्ञ करना चाहिए? बकरे के द्वारा अथवा अन्न द्वारा ? हमारे इस संदेह का आप निवारण करें। हम लोगों की राय में आप ही प्रामाणिक व्यक्ति हैं।

तब राजा वसु ने हाथ जोड़कर उस सबसे पूछा—विप्रवरों! आप लोग सच-सच बताइये, आप लोगों में से किस पक्ष को कौन सा मत अभीष्ट है? अज शब्द का अर्थ आप में से कौन सा पक्ष तो बकरा मानता है और सा पक्ष अन्न?

वसु के प्रश्न के उत्तर में ऋषियों ने कहा—राजन्! हम लोगों का पक्ष यह है कि अन्न से यज्ञ करना चाहिए तथा देवताओं का पक्ष यह है कि छाग नामक पशु के द्वारा यज्ञ होना चाहिए। अब आप हमें अपना निर्णय बताइये।

वसु द्वारा हिंसापूर्ण यज्ञ का समर्थन व रसातल-प्रवेश

राजा वसु ने देवताओं का पक्ष लेते हुए कह दिया—अज का अर्थ है छाग (बकरा) अतः बकरे के द्वारा ही यज्ञ करना चाहिए।

यथा :–

देवानां तु मतं ज्ञात्वा, वसुना पक्षसंश्रयात् ।
छागेनाजेन यष्टव्यमेवमुक्तं वचस्तदा ।।१३।।

यह सुनकर वे सभी सूर्य के समान तेजस्वी ऋषि क्रुद्ध हो उठे और विमान पर बैठकर देवपक्ष का समर्थन करने वाले वसु से बोले—राजन्! तुमने यह जानकर भी कि अज का अर्थ अन्न है, देवताओं का पक्ष लिया है अतः तुम आकाश से नीचे गिर जाओ। आज से तुम्हारी आकाश में विचरने की शक्ति नष्ट हो जाय। हमारे शाप के आघात से तुम पृथ्वी को भेद कर पाताल में प्रवेश करोगे। नरेश्वर! तुमने यदि वेद और सूत्रों के विरुद्ध कहा हो तो हमारा यह शाप तुम पर अवश्य लागू हो और यदि हम लोग शास्त्र-विरुद्ध वचन कहते हों तो हमारा पतन हो जाय।

ऋषियों के इतना कहते ही तत्क्षणा राजा उपरिचर वसु आकाश से नीचे आ गये और तत्काल पृथ्वी के विवर में प्रवेश कर गये।

इस सन्दर्भ में महाभारतकार के मूल श्लोक इस प्रकार हैं :–

कुपितास्ते ततः सर्वे, मुनयः सूर्यवर्चसः ।।१४।।

ऊचुर्वसुं विमानस्थं, देवपक्षार्थवादिनम् ।
सुरपक्षो गृहीतस्ते, यस्मात् तस्माद् दिवःपत ।।१५।।
अद्यप्रभृति ते राजन्नाकाशे विहता गतिः।
अस्मच्छापाभिघातेन, महीं भित्त्वा प्रवेक्ष्यसि ।।१६।।
(विरुद्धं वेदसूत्राणामुक्तं यदि भवेन्नृप ।
वयं विरुद्धवचना, यदि तत्र पतामहे ।।)
ततस्तस्मिन् मुहूर्तेऽथ, राजोपरिचरस्तदा ।
अधो वै संबभूवाशुः भूमेर्विवरगो नृप ।।१७।।

(महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ३३७)

वसु के आठ पुत्रों में से छः पुत्र क्रमशः एक के बाद एक राजसिंहासन पर बैठते ही दैवी-शक्ति द्वारा मार डाले गये, शेष दो पुत्र सुवसु और पिहद्धय शुक्तिमती नगरी से भाग खड़े हुए। सुवसु मथुरा में जा बसा और पिहद्धय का उत्तराधिकारी राजा सुबाहु हुआ। सुबाहु के पश्चात् क्रमशः दीर्घबाहु, वज्रबाहु, अर्द्धबाहु, भानु और सुभानु नामक राजा हुए। सुभानु के पश्चात् उनके पुत्र यदि इस हरिवंश में एक महान् प्रतापी राजा हुए। यदु के वंश में सौरी और वीर नाम के दो बड़े शक्तिशाली राजा हुए। महाराज सौरी ने सौरिपुर और वीर ने सौवीर नगर बसाया।

१. सीयलजिणस्स तित्थे, सुमुहो नामेण आसि महिपालो।
कोसम्बीनयरीए, तत्थेव य वीरय कुविन्दो।। (पउम. च. उ. २१ गा. २)

२. पुव्वकोडीसेसाउएसु तेसिं वेरं सुमरिऊण वाससयहस्सं

३. समइक्कंते सीयल जिणम्मि तहणागए य सेयंसे।
एत्थंतरम्मि जाओ हरिवंसो जह तहा सुणह।। (चउ. म. पु. च., पृष्ठ १८०)

४. कयाइं च महाजणमज्झे पव्वयओ रायपूजिओ अहं त्ति गव्विओ पण्णवेति–अजा छगला तेहिं य जइयव्वं ति। (वसुदेव हिण्डी, प्रथम खं.....पृ० १९०–१९१)

५. ततो तेसिं समच्छरे विवादे पट्टमाणे पव्वयओ भणति—
जइ अहं वितहवादी ततो मे जिच्छेदो विउसाणं पुरओ, तव वा।
(वसुदेव हिण्डी प्र. खं. पृ० १९१)

६. ततो उवरिचरो वसुराया, सोत्तीभतीए पव्वय-नारद विवाते अजेहिं अबीजेहिं छगलेहिं वा जइयव्वं ति पसुवधधायअलियवयण साक्खिकज्जे देवया णिपाइयो अधरिं गतिं गओ।

७. सर्वकर्मस्वहिंसा हि, धर्मात्मा मनुब्रवीत् ।
कामकाराद् विहिंसन्ति; बहिर्वेद्यां पशून् नराः ।।५।।
(शा० पर्व, अ० २६४)

.... अहिंसा सर्वभूतेभ्यो, धर्मेभ्यो ज्यासी मता ।।६।।
(वही)

यदि यज्ञांश्च, वृक्षांश्च, यूपांश्चोद्दिश्य मानवाः ।
वृथा मासं न खादन्ति, नैषधर्मः प्रशस्तये ।।८।।
(वही)

सुरा मत्स्याः मधुमासमासवं कृसरौदनम्।
धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद् वैदेषु कल्पितम् ।।९।।
(वही)

मानान्मोहच्च लोभाच्च, लौल्यमेतत्प्रकल्पितम्।
विष्णुमेवाभिजानन्ति सर्वयज्ञेषु ब्राह्मणाः ।।१०।।
(वही)

८. राजोपरिचरो नाम, धर्मनित्यो महीपतिः।
वभूव मृगयां गन्तुं, सदा किल धृतव्रतः ।।१।।
स चेदिविषयं रम्यं, वसुः पौरवनन्दन ः।
इन्द्रोपदेशाज्जग्राह, रमणीयं महीपतिः ।।२।।

तमाश्रमे न्यस्तशस्त्रं, निवसन्तं तपोनिधिम् ।
देवाः शक्र पुरोगा वै, राजानमुपतस्थिरे ।।३।।
इन्द्रत्वमर्हो राजायं, तपसेत्यनुचिन्त्य वै।
तं सान्त्वेन नृपं साक्षात्, तपसः संन्यवर्तयन् ।।४।।
दिविष्ठस्य भुविष्ठस्त्वं, सखाभूतो मम प्रियः ।
रम्यः पृथिव्यां यो देशस्तमावस नराधिप ।।७।।
....न तेऽस्त्यविदितं किंचित्, त्रिषु लोकेषु यद्भवेत् ।।८।।
देवोपभोग्यं दिव्यं त्वामाकाशे स्फाटिकं महत्।
आकाशगं त्वां मद्दत्तं विमानमुप्पत्स्यते ।।१३।।
त्वमेकः सर्वमर्त्येषु विमानवरमास्थितः।
चरिष्यस्युपरिस्थो हि, देवो विग्रहवानिव ।।१४।।
ददामि ते वैजयन्तीं, मालामम्लानपंकजाम्।
धारयिष्यति संग्रामे, या त्वां शस्त्रैरविक्षतम् ।।१५।।
यष्टिं च वैष्णवीं तस्मै, ददौ वृत्रनिषूदनः।
इष्टप्रदानमुद्दिश्य, शिष्टानां प्रतिपालिनीम् ।।१७।।

(महाभारत, आदिपर्व, अध्याय ६३)

९. समाप्तयज्ञो राजापि प्रजां पालितवान् वसुः ।.............६२।।

(महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ३३७)

वैर का विपाक

जिसकी स्वप्न में भी शिखी ने कल्पना नहीं की थी ऐसा आश्रय उसे अब मिल गया था। सूरिवर विजयसिंह के सानिध्य में जैसे अधिक वह आता गया वैसे ही आध्यात्मिकता के पक्के रंग से भी वह रंगता गया। पहले जिसको ऐसा लगता था कि इस विराट विश्व में किसका स्नेह, किसका आश्रय वह पाएगा, उसे अब अंधेरी रात के बाद नया चन्द्रोदय हुआ हो ऐसा लगने लगा। यहां इसको जो ज्ञान का प्रकाश मिला है संसार-रचना के जिन मौलिक नियमों का इसको भान हुआ है, उसे वह अपने जीवन की महान् पूंजी समझने लगा। गुरु को भी लगा कि ऐसा चतुर, शांत, कुलीन और कल्याण की व्यथा भोगने-अनुभव करनेवाला शिष्य भाग्य से ही किसी को ही मिलता है।

एक दिन तपस्वी गुरुदेव और कल्याणकांक्षी शिष्य महाव्रतों की चर्चा कर रहे थे कि तभी एक ब्राह्मण वंदना करके पास ही बैठ गया। शिखी ने इस नवागंतुक को तुरत ही पहचान लिया। आगंतुक शिखी का पिता ही था जो पुत्र की खोज करते हुए यहां तक पहुंच गया था। शिखी की माता के व्यवहार से उद्विग्न बने हुए उस पिता के सिर माता के कितने ही धर्म निबाहने का भार आ गिरा था। अतः जिस माता ने उसे दुत्कार दिया था, उसे खोजने को और हो सके तो फिरते घर ले जाने को वह आया था।

शिखी इस समय मुनिधर्म- पंच महाव्रत स्वीकार करने की तैयारी कर रहा था। गुरु से ज्यों ही वह पृथक हुआ कि पिता ने उसे एकांत स्थान में ले जाकर अपने अंतर की असह्य वेदना बताई। अवश्य ही उसका दर्द वर्णनातीत था। उसके एक एक शब्द में वात्सल्य की उर्मियां गूंज रही थी।

शिखी को वह कहने लगा : बेटा ! तेरा जैसा नम्र, निरभिमानी और गंभीर प्रकृति का पुत्र किसी परम भाग्यवंत के यहां ही जन्म सकता था। मेरे जैसे दरिद्र और दुर्बल पिता के यहां तेरा जन्म एक आश्चर्य अकस्मात् है। मैं तेरी पूरी कदर नहीं कर सका। तेरी माता के कुटिल स्वभाव ने तुझको मेरे से विमुख करा दिया। परन्तु तेरा अभाव मुझको पीड़ा दे रहा है। मैं तेरे लिए स्वतंत्र व्यवस्था करूंगा। तू मेरे साथ पीछे चल।

शिखी पिता के स्वभाव में रही मृदुता को जानता था। उनको दुःखी नहीं देखना चाहता था। परन्तु जिसको अनायास ही चिंतामणि प्राप्त हो गया हो और उसकी कीमत भी जो समझता हो, वह उसका त्याग फिर कैसे कर सकता था?

शिखी ने कहा : पिताजी! आपका मेरे पर बड़ा उपकार है। मेरे लिए आप दुःखी हैं यह मैं देखता ही आया हूँ। परन्तु मैंने संसार में नहीं लौटने का निर्णय कर लिया है। कृपाकर मुझे अब इस मार्ग से च्युत मत कीजिए।

अब पिता ने उसे अनेक रीति से समझायाः महाव्रत की धुरा का वहन करना किशोर का काम नहीं है। इससे जो भी फिसल जाता है वह किसी भी काम का नहीं रहता है। महाव्रत का पालन तो तलवार की धार पर चलने जैसा है आदि-आदि युक्तियों से शिखी का मन झुकाने का उन्होंने प्रयत्न किया। परन्तु शिखी अपने निर्णय में अचल ही रहा।

पिता ब्रह्मदत्त खिन्न हृदय वहां से लौट गया। जाते-जाते भी उसने कहाः बेटा! मैं न तो हा ही कहता हूं और न ना ही कहता हूं। तुझे आशीर्वाद देने जितनी भी मेरे में योग्यता नहीं है। मात्र इतना ही मैं कहता हूँ कि माता के प्रति जो कुछ भी क्लेश हुआ हो तो वह सब भूल जाना। वह उसका स्वाभावदोष है। मेरी अंतिम प्रार्थना तो इतनी ही है कि कभी किसी समय दर्शन दे जाना।

शिखी भक्तिभाव से पिता के चरणों में गिर पड़ा। पिता भी गहरे विश्वास के साथ वहां से विदा हो गए।

शिखी का कीर्तिघोष दिशाओं को भेदता गर्ज उठा। थोड़े दिनों पूर्व जिसका नाम ही कोई नहीं जानता था, जो अपने गांव के चारों कोनों में भूला भटकता फिरता था, उसका नाम त्यागियों, तपस्वियों और मुमुक्षुओं की जिह्वा पर अब रम गया था। शिखी को संसार की किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति आसक्ति नहीं थी। उसने अपने समस्त सामर्थ्य गुरु की सेवा में अध्ययन-अध्यापन में और क्रियाकलाप में समर्पण कर दिया था। गुरु की भी उस पर मुक्त दया बरस रही थी। कुछ ही काल में वह आगमों का पारंगत ही नहीं बन गया अपितु उसकी क्रियारुचि भी ज्ञानार्जन के साथ तालबद्ध बन गई। शिखी मात्र पांडित्य में नहीं, अपितु संयम-विराग में भी अग्रणी हो गया। अभी तो इसने यौवन की देहली पर पैर ही रखा था, परन्तु इसके सदा नमित्त रहते नेत्र गांभीर्य और चारित्र की निर्मलता की साक्षी दे रहे थे। उसे किसी ओर भी ताक कर देखने की मानों आवश्यकता ही नहीं थी। विश्वभर की संपत्ति और स्नेहसौहार्द अपने अंदर ही भरे हो वैसा वह आत्मनिमग्न रहता था। गुरु को वंदन करने जाता तो गुरु को लगता था कि एक दिन यह शिष्य शिखी विश्व का वंदनीय बन जाना चाहिए। उनकी बहुत सी चिन्ताएँ शिखी ने अपने ऊपर ले ली थी। साधुओं के बड़े समुदाय को वही अध्ययन कराता था, वही उनकी शंकाओं का स्पष्टीकरण करता था। शिखी मानो पूर्व जन्म का महान् शास्त्रान्यासी हो और अपूर्ण रहा हुआ प्रचार ही पूर्ण करता हो वैसी ज्ञान की प्रथा-प्याऊ लगाकर वह बैठा था।

ताम्रलिप्त नगर के बाहर, एक मनोरम उपवन में एक वार शिखी मुनि वर्तुलाकार में आगम के अभ्यासियों के बीच बैठे थे और शास्त्रचर्चा चल रही थी। शिखी मुनि की शांत वाणी, वीणा के स्वर का भान करा रही थी। बीच-बीच जब भी वे स्मित-हास बिखराते साधु-समुदाय के सामने देखते तो उनकी स्वच्छंद दंतपक्ति मरकतमणि की रश्मि सी दिखाती थी।

तभी एक ब्राह्मण वहां आकर खड़ा हो गया। मुनियों को वंदन करने जितना विवेक भी उसमें नहीं था। एक हाथ में रखा हुआ रत्नकंबल शिखी

मुनि के पास धरकर वह इतना ही बोलाः यह आपकी माता जालिनी से आपको भेट मिला है।

साधु मुनि किसी का भेट स्वीकार नहीं करते। पूरी-पूरी आवश्यकता नही हो वहां तक किसी वस्तु का परिग्रह भी नहीं रखते। शिखी मुनि तो आप गुरुदेव के उतरे हुए शब्द सुनने पर भी यह मन की भ्रमणा ही कदाचित हो उन्हें ऐसा लग रहा था।

माता का ऐसा अप्रतिम स्नेह देखकर, इतने दूर मनुष्य के साथ रत्नकंबल जैसी मूल्यवान वस्तु भेजी देखकर पास बैठे हुए मुनियों के हृदय अनुमोदना से द्रवित हो गए। एक तो उनमें से बोल ही उठा :

धन्य माता !

सत्य ही तुम कोश नगरी से इतनी दूर आए हो और यह भेट मेरी संसार की माता जालिनी ने ही भेजी है? शिखी मुनि ने और भी खातरी करने के लिए उससे प्रश्न किया।

ब्राह्मण एक स्थान पर स्वस्थ होकर बैठा और उत्तर में उसने अपना सिर हिला दिया।

इस ब्राह्मण का नाम सोमदेव था। वह कह रहा था। आप चले आए तब से माता जालिनी भारी उद्वेग अनुभव कर रही है। उन्हें परिताप तो बहुत ही हुआ। परन्तु क्या करे? अन्त में उससे नहीं रह गया तब यह भेंट देकर मुझे उसने भेजा है।

माता का वात्सल्य! जगत में जिसका सानी दूसरा नहीं मिल सकता ऐसा मातृ स्नेह ! शिखी का हृदय स्नेह उर्मियों से भर गया। चाहे जैसी कठोर-निर्मम बन जाए तो भी आखिर माता ही तो वह है? वात्सल्य का स्रोत भले ही सुखा गया दीखे, परन्तु उसमें पूर आए बिना नहीं रह सकता है।

माता के प्रति सारा विद्वेष, दुःस्वप्न की तरह शिखी मुनि के हृदय में से काफुर हो गया। उन्होंने रत्नबल का स्पर्श किया। उसमें भी मानों जननी के सुकुमार चरणों को वे स्पर्श करते हो ऐसी गद्गदता अनुभव करने लगे।

कुछ काल तक उन्हें लगा कि यदि कुछ एकांत मिले तो इस वात्सल्य के तानाबाने से बुनी हुई रत्नकंबल को मस्तक पर रख मैं दो घड़ी आनन्द नृत्य करूं।

साधु समुदाय के मध्य बैठे हुए शिखी मुनि अधिक कुछ भी नहीं बोल सके। संसारी स्वप्न के प्रति आसक्ति से हिमगिरि समान अचल व्रतधारी भी क्षण के लिए चलित हो ही गया।

माता ने कंबल तो भेजा, पर गुरु की आज्ञा बिना वह स्वीकार नहीं किया जा सकता है। शिखी मुनि अर्धस्पष्ट स्वरों से बोले और ब्राह्मण को वहीं बैठा रहने को कह गुरुदेव के पास पहुंचे।

शिखी को अचानक अपने पास आता देख गुरु के मुख पर प्रफुल्लता छा गई। आवश्यकता हुए बिना शिखी नहीं आ सकता है, ऐसा सोच शिखी क्या कहने पूछने आया है यह जानने को वे उत्सुक हो गए।

माता की भेजी भेट रत्नकंबल क्या मैं स्वीकार करूं?

आशंका और क्षोभ से भरे स्वर में गुरु ने शिखी की मानव-सहन दुर्बलता का माप कर लिया। शिखी स्वयं तो सर्वस्व का त्यागी है, पर सुन्दर और मोहक लगे इसलिए चाहे जो वस्तु स्वीकार कर लेने की निर्बलता साधु को शोभा नहीं देती यह बात कदाचित् यह भूल गया है।

परन्तु गुरु ने इसकी निर्बलता की बात गांभीर्य के नीचे दबा दी। चाहे जो हो शिखी यौवनवय प्राप्त है। माता के विरल वात्सल्य से वह आकर्षित हुआ है।

आंतर-रोग के वैद्य को शोभे ऐसे शब्दों में गुरु ने कहा: आवश्यकता ही हो तो कंबल लेने में एतराज नहीं है। बिना कारण भी तुम नए वस्त्र उपयोग नहीं करते हो। फिर भी निर्ममत्वता से कम्बल लेना ही हो तो खुशी से ले लो।

शिखी ने माता की भेट ले ली। कंबल में मातृहृदय की उष्मा भरी हो ऐसा उन्हें लगा। कंबल को अनिमेष देखते देखते दृष्टि सम्मुख माता का हृदय परिवर्तन खड़ा हो गया।

गुरु के पास से शिखी अपने स्थान पर लौटे तो उसने उस ब्राह्मण सोमदेव को वहीं बैठा पाया। शिखी कुछ कहें इससे पूर्व ही सोमदेव कहने लगा:

जालिनी देवी ने कहलाया है कि कोश नगर यहां से बहुत दूर नहीं है। एक बार दर्शन दे जाओ तो अच्छा रहे। कंबल के साथ ही माता ने आमंत्रण भी भेजा है यह जान शिखी को अपना समस्त दुर्भाग्य सौभाग्य में पलट जाता लगा।

आनंद के आवेश में शिखी मुनि बोल उठे:

मुनि से निश्चय वचन जो नहीं दिया जा सकता है। हम तो निर्ग्रन्थ विहारी हैं। फिर भी यदि कोशा-नगर की ओर आना हो गया तो अवश्य ही माता को मिलूंगा।

सोमदेव को बस इतना ही चाहिए था।

शिखी मुनि को कौन जाने अभी क्या हो गया है? बात कहते हुए वे अन्यमनस्क हो जाते हैं। तर्क और प्रमाण में, सजी धार जैसी इनकी बुद्धि भी जरा कुंठित हो जाती है। स्मरण करने का परिश्रम करती है परन्तु स्मृति साथ न देते हुए न जाने कहां दौड़ जाती है और तो ठीक, शिखी मुनि का निर्दोष - उज्जवल हास्य जो सारे उपवन में बहता था वह भी अब अदृश्य हो गया है। कोई गहरी मर्मव्यथा, कोई गहरा आघात शिखी मुनि को बेचैन बना रहा है। यह दर्द ऐसा है कि मुनि-जीवन में किसी को स्पष्ट जैसे कहा नहीं जा सकता है वैसे ही सहा भी नहीं जा सकता है।

शिखी मुनि ने दीक्षा ली तब से और अब की स्थिति में एक भारी फेरबदल हो गया है। बाहर के व्यवहारों पर ही जिनकी दृष्टि है- बाह्य दृष्टि से ही मनुष्य माप करने को जो अभ्यासी हैं, वे शिखी में बहुत भारी परिवर्तन नहीं देख सकेंगे। परन्तु जो सूक्ष्म मनोव्यापारका पृथक्ककरण

कर सकते हैं, वे शिखी मुनि के अंतर में कहीं भी शल्य चुभ रहा है ऐसा निदान किए बिना रही नहीं सकते हैं।

शिखी जन्मदुःखी हैं। माता, भार्गनी अथवा बंधु के स्नेह से वे अपरिचित हैं। परन्तु जब से जालिनी माता का आमंत्रण उन्हें मिला है, तब से तो वे माता का देवदुर्लभ प्रेम प्राप्त करने को इस जन्म में भाग्यशाली बनें ऐसी आशा उन्होंने बना रखी हैं। इस आज्ञा डोरी पर शिखी का जीवनझूल रहा है। आसक्ति को बंधनस्वरूप माननेवाला सूक्ष्म से सूक्ष्म आसक्ति के तंतु को छेद डालने को तत्पर शिखी, माता के स्नेहभरे आमंत्रण को भूल नहीं सकता है। कंगाल को, द्वार द्वार से भिक्षा मांगने को भटकनेवाले को मानो कुबेर का भंडार ही हाथ लग गया है। मात्र उसके खुलने भर की ही प्रतीक्षा उसे करनी है।

शिखीमुनि अपनी माता को मिलने को उत्सुक बने हुए हैं। प्रत्येक पहर वे माता के दर्शन का दिवास्वप्न देखते हैं। माता से उन्हें कोई महान् धनदौलत मिल जाएगा ऐसी तो उन्हें कुछ भी आज्ञा नहीं है। उसमें तो इनको मोह भी नहीं है। मात्र माता वात्सल्य दृष्टि से एक बार इनको सामने देख ले, एक बार भी यह मेरा पुत्र है ऐसा कह दे तो शिखी की जन्मभूख को संतोष प्राप्त हो जाए।

शिखीमुनि ओसबिंदु के जल के पीछे पागल बने दौड़ रहे है, यह बात उन्हें कौन समझा सकता है? जिसको वे स्नेह-वात्सल्य-प्रेम के मधुर नाम से कहते है, वह मूलतः तो मोह-ममता-वासना के ही रूपांतर है। गुरुप्रसाद प्राप्त शिखीमुनि जैसे त्यागी की आंखों के आगे आज मोंह का परदा आ गिरा है।

विजयसिंहसूरि का श्रमण समुदाय विहार करता हुआ एक दिन कोश-नगरी से थोड़ी ही दूर पर आकर ठहरा था। माता को मिलने की बहुत अच्छी अनुकूलता प्राप्त हो गई है ऐसा मान कर युवक मुनि ने सूरिजी से माता के यहां जाने की अनुमति मांगी।

सूरिजी थोड़ी देर तो शिखी मुनि के मुंह की ओर आर्द्र हृदय से देखते रहे। अलक्ष्य में अनिष्ट के आसार देखते हो वैसे वे क्षण भर खिन्न जैसे भी दिखाई दिए। स्पष्ट अनुमति देते कोई उनकी जिव्हा को मानो पकड़ कर रख रहा है ऐसा भी उन्हें लगा।

जाना ही हो तो प्रसन्नता से जाओं। पर मुनिजीवन में ऐसी निर्बलता-चाहे वह सूक्ष्म ही दीखती हो, फिर भी कब वह विराट स्वरूप धारण कर सकती है वह कहा नहीं जा सकता है। स्पष्ट सम्मति देने की अनिच्छावाले सूरिजी ने गर्भितवाणी में कह दिया।

जीवन में यह पहली ही बार माता को सत्य की ऊर्मि अनुभव कर रहा हूँ-इसी लिए आकर्षित हुआ हूं। दो तीन दिन से अधिक नहीं रहूँगा। फिर आ मिलूंगा। शिखी ने सूरिजी की ग्लानि बराबर देख ली थी।

ऊर्मि का कोई चिन्ह दीख नहीं रहा है। माता को जो निश्चयं ही प्रेम का उद्रेक हुआ हो-संतानप्रेम हुआ हो तो माता स्वयं थोड़ा सा कष्ट उठा कर क्या यहां नहीं आतीं? परन्तु कदाचित् जनेता के प्रति इसमें अन्याय भी होता है। मेरे दिल में तुझको तीन दिन दूर करते हुए मानों तुझे सदा के लिए खो ही रहा हूं ऐसा भय अनुभव हो रहा है। इसीलिए मैं उल्लास मन से तुझे आज्ञा नहीं दे सकता हूँ। सूरिजी ने हृदय से उठती ध्वनि को अधिक स्पष्ट शब्दों में कह सुनाया।

गुरुजी, यह तो मात्र आशंका ही है। माता पास जाने में मुझे किस लिए किसी प्रकार का भय अथवा शंका रहना चाहिए? माता को भी मैं धर्म प्राप्त कराऊं ऐसा मुझे उत्साह है।

धर्म उत्साह कराने की बात ने सूरिजी के अंतर को अभिभूत कर दिया। ऐसा पुत्र माता को धर्म प्राप्त कराए यहीं मातृजाति के उपकार का अधिक से अधिक बदला है ऐसा जान उन्होंने शिखी को अन्य दो तीन मुनियों के साथ कोश-नगर की ओर विहार करने की अनुमति दे दी।

सूरिजी अकेले रह गए तब उन्हें लगा कि शिखी को सम्मति देने में उन्होंने भी कुछ उतावलापन बता दिया। शिखी को विश्वास है, भावनाओं में वह बह सकता है। परन्तु उसके संयमनिर्वाह की जो जबावदारी मैंने अपने सिर ले रखी है, उसमें किंचित प्रमाद हुआ दीखता है। यदि जालिनी के आकर्षण को शिखी मातृप्रेम मानने को प्रेरित हुआ है वह मातृप्रेम निश्चय ही यदि जालिनी के हृदय में से जागृत हुआ है तो यह शिखी की आज तक अवगणना कैसे कर सकती थी? मातृहृदय का झरा क्षण के लिये सूख भी जाए परन्तु दूसरे ही क्षण उसका स्नेहक्षण किलोलें करता प्रवाहित हुए बिना रह नहीं सकता है। चाहे जो हो, पर शिखी किसी अनिष्ट-भयावह मार्ग में विचर रहा है ऐसा उन्होंने अनुभव किया सूक्ष्म कंपकंपी अनुभव की। अन्त में तो जो होना है वह होगा ही। ऐसा चिंतन करते हुए उन्होंने मन को फिर से स्वस्थ कर लिया।

कोश नगरी की गली गली में आज बहुत दिनों के पश्चात् ज्वार आया है। शिखी मुनि इस नगर के मेघवन उद्यान में कितने ही बुद्ध मुनियों के साथ आकर ठहरे हैं। ये सारे गांव में घूम आए हैं। पहले तो ये शिखी मुनि इसी भूमि की संतान हैं। फिर वे त्यागी तपस्वियों के संसार में एक ज्योतिर्धर के समान माने जाने के कारण गांव के लोगों में इनके प्रति ममत्व तथा बहु मान जागे इसमें आश्चर्य ही क्या? यह तो विलकुल स्वाभाविक है राजा और पुरवासी स्त्रियों एवं पुरुषों ने शिखी मुनि का बड़े प्रेम से स्वागत किया।

यहाँ आने पर शिखी मुनि को अपने पिता ब्रह्मदत्त के अवसान के समाचार मिले। दूसरे दिन शिखी मुनि स्वयं माता जालिनी को मिलने को आगे होकर गए। जालिनी ने शिखी मुनि के आगमन के समाचार तो सुन लिए थे, यहीं नहीं अपितु उनके पांडित्य और वैराग्य की स्तुति भी उसने सुन ली थी। फिर भी विधि की विचित्रता तो यह थी कि माता को इस स्तुति और सम्मान में भी अपनी निंदा-घृणा-तिरस्कार मूर्तिमंत होते दीखते थे। वैर के कारण उसे प्रत्येक बात में उलटी ही मति सूझती थी। वह ऐसा मानती कि

जिस पुत्र का मैंने त्याग कर दिया है उसका बहुमान होना वस्तुतः मेरी ही निंदा है। कहने का अभिप्राय यह है कि जालिनी की आंख में खटकता-रगड़ता हो वह सारे विश्व को भी खटकना चाहिए और यदि ऐसा न हो तो इस कांटे को उखाड़कर फैंक ही दिया जाना चाहिए। जालिनी अपनी रचित जाल में आप ही फंस गई थी। वह इस कांटे को सदा के लिए जैसे भी हो खींच निकालने को कटिबद्ध हो गई थी। वात्सल्य के दंभ में, धार्मिकता की आड़ में वस्तुतः तो वह अपना प्रपंच जाल ही फैला रही थी।

शिखी मुनि तो सरल स्वभावी थे। जालिनी के मुख पर यद्यपि ग्लानि की गाढ़ी छाया छाई दीख रही थी फिर भी अपने सरल स्वभाव के कारण उन्होंने यह मान लिया कि पिता के देहावसान के कारण ही माता आज शोक-संतप्त दीख रही है। उनके वे प्रसंग भी अवश्य स्मरण हो आए जब कि माता और पिता के बीच में उन्हें लेकर ही कलह और विसंवाद हुआ करता था। पिता सदा मेरा ही पक्ष लेते थे इसका भी उन्हें स्मरण हुआ। शिखी मुनि का हृदय अभी बहुत ही द्रवित हो रहा था। फिर भी काल का यही धर्म है, काल किसी को छोड़ता नहीं है, ऐसा कहते हुए उन्होंने माता को कुछ आश्वासन दिया।

क्रमशः

क्या जैन समाज की चेतना कभी जागृत होगी?

सायरा उगमजी ललवानी, बेंगलोर

वैसे तो आज जैन धर्म में इतना बदलाव आ गया है कि चारों तरफ नाम, यश, प्रसिद्ध, शिथिलता और स्वार्थ सिद्धि का ही बोलबाला हो गया है। आज भगवान के आचरणों, आदर्शों व आदेशों पर कोई भी चलता दिखाई नहीं देता। आज स्थिति यह है कि मान लो भगवान महावीर साक्षात भी अवतरित हो जायें तो उनको पहचानने से उनके परम अनुयायी ही इन्कार कर देंगे। भगवान महावीर का केवलमात्र नाम लिया जाता है, जगह जगह पर फोटो व मंदिरों में प्रतिमाएं स्थापित की जाती है, लेकिन उनके आदर्श उपदेश केवल प्रवचनों तक ही सीमित है। धर्म के मर्म को कोई भी समझना नहीं चाहता। धर्मसंघ की प्रभावना आज एक ऐसी ढाल बन गई है कि जिसकी ओट में खोट है । उसमें सब पाप क्षम्य हो जाते हैं।

वैसे तो कहने को हजारों बातें आज है, लेकिन हमारे समाज की कुछ बातें जो मेरी अल्प बुद्धि में आई है, मैं यहाँ समाज के समक्ष रख रही हूँ। आशा है समाज के चिंतक व बौद्धिक व्यक्ति इस पर चिंतन व मनन करेंगे।

कार्यक्रमों में नवकार मंत्र की दुर्दशा :

भारत भर में जहाँ जहाँ जैन समुदायों के घर है, जैन मंदिर है, आराधना भवन है, वहाँ निश्चित रूप से धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। कार्यक्रमों के दौरान जिन शासन की प्रभावना के नाम पर विभिन्न रथ यात्राऐं निकाली जाती है। बैंडबाजों के साथ शोभायात्रा निकाली जाती है। बैन्डवालों द्वारा स्तवन भजन के साथ महामंत्र नवकार भी गाया जाता

है। गाने वाले के मुँह में गुटका चलता रहता है, और जहाँ कहीं रुके वहां सिगरेट के कस भी। इस तरह से हमारा महामंत्र नवकार अपवित्र मुख अपवित्र स्थान एवं अपवित्र शरीर से सड़कों पर गाया जाता है। महामंत्र नवकार, जो आत्मकल्याण के दिव्य, इहलोक, परलोक सर्वत्र सुखदायी महामंत्र, जो चौदह पूर्वो का सार, जिसके अड़सठ अक्षर अड़सठ तीर्थों की यात्रा के समान फल देने वाले कहे जाते हैं। नवकार मंत्र में आठ दिव्य सम्पदाएं व नव निधियां निहित है जो भव-बंधन से मुक्त करने वाली है, ऐसे महामंगल महाश्रुत मंत्र को क्या सड़कों पर इस तरह गाना उचित है?

क्या कभी सनातन धर्म के गायत्री मंत्र को, गीता के पाठ के इसप्रकार बैन्डवालों से सुना? क्या मुसलमानों ने कलाम-ऐ-पाक को लइस तरह बैन्ड पर बजवाया? फिर हमारे इस महिमामय नवकार मंत्र की ऐसी दुर्दशा क्यों?

पत्र-पत्रिकाओं का महंगा व खर्चीला प्रकाश :

विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रतिष्ठान महोत्सव, दीक्षा प्रसंग एवं आचार्य भगवंतों व साधु साध्वियों के चातुर्मास प्रवेश पर संघ की जो पत्रिकाएं प्रकाशित होती है, पत्रिकाओं का उपयोग मात्र सूचना के लिए होता है। यदि पत्रिकाऐं सादी छपवाई जाएं तो समाज के धन की काफी बचत होगी। पत्रिकाओं की संख्या भी दो से पांच हजार अथवा बहुत सी उससे भी ऊपर होती है। एक-एक पत्रिका एवं उसका बुकलेट रूप में ५० से १५० रुपया बहुत सी बार आंका जाता है जो आर्ट पेपर में मल्टीकलर में ऑफ़सेट प्रिन्टिंग की होती है। इसी तरह उस पर पाँच से दस रूपयों का स्टाम्प भी लगाना पड़ता है। अब आप समझ सकते हैं कि एक साधु या साध्वी महाराज के प्रवेश एवं अन्य अवसरों पर पत्रिकाओं का खर्च, जिसके पीछे नाम यश और प्रतिष्ठा की भूख ही विशेष जुड़ी रहती है जो उन्हें पतन की ओर ले जाने वाली है। श्रावकों को मात्र वर्तमान में अढाई रुपये के अंतरदेशीय पत्र द्वारा चातुर्मास के स्थल अथवा स्थान की सूचना दी जा सकती है। इस बचत से उस गांव या शहर में धार्मिक पाठसाला का संचालन किया जा सकता है, जहाँ साधु

साध्वियों का चातुर्मास होता है। जो बच्चे प्रतिक्रमण सीख रहे है, उन बच्चों को पुरुस्कार से सम्मानित किया जा सकता है। इसके अलावा भी कई रचनात्मक कार्य भी किए जा सकते हैं।

धार्मिक पत्रिकाओं व पेम्पलेटों का आशातना पूर्ण दुरुपयोग :

आजकल धार्मिक व शहर के अन्य पत्रों में भी एवं पेम्पलेटों में तीर्थंकरों व आचार्य भगवन्तों के फोटो छपवाए जाते है। प्रवचन भी छपते हैं जिन्हें पढ़ने अथवा कुछ समय बाद या तो रद्दी में बेच दिया जाता है अथवा खाने पीने के चीजों में जूठन के रूप में उपयोग होता है अथवा सड़कों पर भी फेंक दिया जाता है, उन पर चला भी जाता है। यहाँ तक कि कई माताएं और बहने बच्चों का मलमूत्र पोंछकर उसे कूड़े में या लेट्रीन में फेंक देती है। क्या यह उचित है? क्या इससे ज्ञानावरणीय कर्मों का बंध नहीं होता? इस पर विवेकपूर्वक चिंतन करने की आवश्यकता है।

डुप्लीकेट तीर्थों की स्थापना, प्रतिष्ठा व नामांकन :

आजकल पुराने तीर्थों के नाम पर जगह जगह तीर्थस्थान बनाये जा रहे हैं, जैसे राजस्थान में पावापुरी, बेंगलौर में सिद्धाचल, दिल्ली में भरत क्षेत्र व गुजरात में चंपापुरी आदि आदि। नये तीर्थों का नाम कल्याणक तीर्थों के नाम पर रखकर उनकी महत्ता को कम करना है। क्या जैन शब्द कोश में शब्दों की कोई कमी है? आनेवाली पीढ़ी के लिए सौ दो सौ साल बाद बहुत बड़े भ्रम का कारण बन सकता है। फिर भी आचार्य गण व साधुसन्त अपने नाम, यश, प्रसिद्ध के लोभ लालच में ऐसा कर रहे है क्या यह शाश्वत तीर्थों की अवमानना नहीं? धर्म के क्षेत्र में भी यह डुप्लीकेट क्या निंदनीय बात नहीं? श्रावकों! निर्णय आपको करना है। आप अपने अर्थ का उपयोग करने से पहले इस पर गहन चिंतन मनन करें, बहकावे में नहीं जावे।

मृत शरीर को रोकने की प्रथा :

मेरा अन्तिम निवेदन है कि आजकल मृत शरीर को रोके रखने की प्रथा बढ़ती ही जा रही है। साधारण वर्ग में ही नहीं, जैन समाज के साधु-संतों

में भी यह प्रथा घर कर रही है। एक तरफ हमारे आचार्य भगवन्त हमें छोटे-से छोटे पाप से बचने के उपदेश देते हैं, पर उनकी मृत्यु के बाद उनके मृत शरीर को उनके शिष्यों के आदेश से दो-दो तीन-तीन दिन रोककर उनके पाप से बचने के उपदेश को गलत साबित कर देते हैं। कथनी और करनी में सारा ही अन्तर रहता है।

मृत्यु के बाद मृत शरीर में अड़तालीस मिनट अथवा एक मुहर्त के बाद जीवों की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है। ज्यों ज्यों समय अधिक होता है, त्यों-त्यों जीवों की उत्पत्ति बढ़ती जाती है। अधिक समय के पश्चात दाह-संस्कार करने से असंख्य स्थारवर व त्रस जीवों के जीवित जलाएं जाने के दोष के भागीदार बनकर हम कर्मों का बन्धि जानते हुए भी करते हैं। मरने के बाद उस मिट्टी को अन्तिम दर्शन का नाम देकर इस व्यर्थ प्रथा को बढावा देना अहिंसा के पुजारी कहलाये जाने वाले जैनियों के लिए क्या यह उचित है? अतः जैन समाज के अग्रगण्यों से मेरा निवेदन है कि जहां तक हो सके, मृत शरीर, चाहे साधु सन्तों का हो या पारिवारिक जनों का, शीघ्रातिशीघ्र दाह संस्कार कर इस पाप कर्म से बचें।

आशा है कि जैन संघ व समाज मेरे इन सुझावों व निवेदन पर गहराई से मनन चिंतन करते हुए ठोस निर्णय लेगा। जैनत्व के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाएगा। असातना, दुर्दशा और हिंसा से बचेगा और जो गलत चल रहा है उसे सही करवाने का प्रयास करेगा।

••••••••••••••••

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON

18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN

Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI

Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR

305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR

C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.

Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.

City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.

1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.

Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER

147, M. G. Road

Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700·016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Vol. XXIX. No. 5 TITTHAYARA August 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225